Edit with WPS Office

विद्या -भवन ,बालिका विद्यापीठ ,लखीसराय

विषय- सह-शैक्षणिक गतिविधि, वर्ग- तृतीय(अ+ब+स)

नीतू कुमारी

सुप्रभात बच्चों,

जैसा कि आप लोग को पता है कि आपको प्रत्येक दिन अध्ययन- सामग्री दी जाती है। और आप पूरे मनोयोग से पढ़ते हैं।

लेकिन शुक्रवार के दिन आपको सी.सी.ए के अंतर्गत परियोजना कार्य दिया जाता है। और आप लोग इस कार्य में बढ़ - चढकरहिस्सा लेते हैं। बच्चों आज आपको रक्षाबंधन के बारे में जानना है। इसे आप अपनी उत्तर पुस्तिका में शुद्ध शुद्ध लिखेंगे।

रक्षा बंधन का इतिहास

एक बार की बात है, देवताओं और असुरों में युद्ध आरंभ हुआ। युद्ध में हार के परिणाम स्वरूप, देवताओं ने अपना राज-पाठ सब युद्ध में गवा दिया। अपना राज-पाठ पुनः प्राप्त करने की इच्छा से देवराज इंद्र देवगुरु बृहस्पति से मदद की गुहार करने लगे। तत्पश्चात देव गुरु बृहस्पति ने श्रावण मास के पूर्णिमा के प्रातः काल में निम्न मंत्र से रक्षा विधान संपन्न किया।

“येन बद्धो बलिराजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वामभिवध्नामि रक्षे मा चल मा चलः।”

इस पुजा से प्राप्त सूत्र को इंद्राणी ने इंद्र के हाथ पर बांध दिया। जिससे युद्ध में इंद्र को विजय प्राप्त हुआ और उन्हें अपना हारा हुआ राज पाठ दुबारा मिल गया। तब से रक्षा बंधन का त्योहार मनाया जाने लगा।